

'वापसी' शीर्षक कहानी की समीक्षा

चर्चित महिला लेखिका की 'वापसी' शीर्षक कहानी 'समकालीन' के विचारन के परिप्रेक्ष्य में जिन्दगी के अघात की सहज ही स्थापना के दृष्टिकोण से व्यक्त होने की सुफल प्रयास है। आधुनिकता ने जहाँ स्वतंत्रता एवं स्वतंत्रता के नये आयाम खोजे हैं, वहीं जीवन मूल्यों के विघटन, व्यापक स्वातंत्र्य, अज्ञानकीपन और अकेलेपन को भी अंगीकार किया है। कहानी में आंतरिक पीड़ा के साथ संघर्ष की रखा गया है। यह मूक होकर व्यथित हृदय की कुशल उबार है।

कहानी के नायक गजाधर काबू जो एक रेलवे के कर्मचारी हैं और उनका एक मध्यम-वर्ग परिवार है। उनके पत्नी और बच्चे सभी हैं परन्तु वे नौकरी के कारण छोड़ा से ही कटौत रहे हैं। जब वे 35 वर्ष नौकरी करने के पश्चात् रिटायर हो रहे हैं तो उनके चेहरे की चमक और आंतरिक खुशी अपने अल्प सीमा में है। कारण यह है कि वे अब घर जायेंगे और पत्नी-बच्चों के साथ जोड़ जीवन की आनन्दपूर्ण से बिता देंगे। इस अपेक्षा का संतुष्ट के कई वर्षों से झूठ रहे हैं। रिटायर होकर वे घर आ गये हैं परन्तु एक ही सप्ताह में उनकी पत्नी आशंकाएँ छुमिल होली जा रही हैं। स्वयं व्यवहार उनके प्रति बदल चुका है। पाली जो पहले उन्हें बहुत ही प्रिय लगती आजकी पत्नी छिनी बदल गयी है। आज केरे-बहु और बर्खास्त के ही अपनी दुनियां मान चुकी है उसे पल भर पति के साथ बैठकर बातें करने की भी इच्छा नहीं है। सिर्फ दो वस्त्र का भोजन सामान व्यवहार वह हानित जीवन से मुक्ति पाने की ही वैवाहिक जीवन समझ रही है। लड़के-लड़की और बहू की भी गजाधर काबू के पास बैठने का रुझान नहीं है। सभी अपने-अपने काम में मग्न हैं। किसी को भी यह जानने की इच्छा नहीं है कि गजाधर काबू के मन में क्या है। वे सिर्फ उनके लिए अपना का मशीन है।

कहानी में आत्मत्याग को स्वयं में झेलते हुए गजाधर बाबू को अपने नौकर गनेशी की भाद काली है किना रक्याल रखता था वो। पैसों में दैन गले ही लेंगे हो जाए लेडिन गनेशी का चान कमी लेट नहीं होता था। मालद्वार चाम और स्वादिष्ट व्यंजन खाने परीसकर वह अपने को दान्य समझता था। लेडिन गनेशी गोजन को कौन कहे चान की चीकी और स्वादहीन हैं। लिडि कइने कोलिये अपने हैं। सबसे बड़ा दुःख तो गजाधर बाबू को उस समय लगता है जब नरेन्द्र चिहलाकर कहता है - "बाबूजी को बेंदे-बेंदे गरी बूझता है।" इस बात से धोंदर ही अंदर धूर कर रहे जाते हैं। उनके 25 वर्ष की तपस्या का महत्वा, शौचकर इनका हानतः मन चिहलाकर डर डरता है। जब बच्चों के परिवार में मैं ही नहीं आमांजस्य करण रखई तब बेचारी पालि कैहे सामजस्य करहे अपनी जीवन को नई बना-बुझी है। समय के साथ गजाधर बाबू अपने को बदल लेते हैं वे विह्वल आंत होकर अपने इच्छाओं का दमन कर रहे हैं। बहुत ही विचित्र दमनीय स्थिति होगयी है उनकी। क्या सोचे ये और क्या होगया। घर में इनके लिजे कोईकाल नहीं है सब कुछ करने के बावजूद भी।

कहानी में वापसी गजाधर बाबू की ऐली होती है जैसे कोई व्यास सग कोल्ले घर छोड़कर जा रहा हो, किनी एकुशी इनकी दिवायर होकर आने में थी इतनी ही कष्ट इनको गहाँ से जाने में। सायद वे अब जीवन के वास्तविक रूप को समझ गये थे। उनके घर से निकलते ही पत्नी नरेन्द्र से कहती है "बाबूजी की चारपाई कमरे से निकाल दे, उसमें चलने तक की जगह नहीं है।" कहानी का चली आंत हो जाता है।

कहानी को सबसे बड़ी विशेषता यह है कि कहान्त को किना किसी कष्टकाल से स्थल एवं सहज शब्दों में मूर्ति प्रभाव के साथ व्यक्त किया गया है। यह केवल एक परिवार के विघटन की कथा नहीं है बल्कि यह एक परिवार के माहयम से आऊ के जीवन के अडलेपन, पीढ़ियों के बीच डगरते तनाव, असंगत जीवन की जीडा का प्रामाणिक दर्शावेज है।